Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 10, October - 2023 Publication Date: 31/10/2023

DOIs:10.2018/SS/202310008 --:-- Research Paper / Article / Review

छत्तीसगढ़ के सामाजिक तथा राजनितिक चेतना के विकास में सतनाम पंथ के महिलाओं का योगदान

[1] Dewcharan Gawaskar, [2] Dr. I. R. Sonwani, [3] Dr. Shailendra Singh

[1]Research Scholar, Department of History, Government Digvijay College, Rajnandgaon,India
[2]Professor, Department of History, Government Rani Avantibai Lodhi College, Rajnandgaon,India
[3]Assistant Professor, Department of History, Government Digvijay College, Rajnandgaon,India
Email - [1] Devgavaskar@gmail.com

सारांश : 21 वीं सदी का दौर वैश्वीकरण का दौर है। इसे महिला सशक्तिकरण के नाम से भी जाना जाता है। भारत वहीं देश है जहाँ एक समय गौवरान्ति स्वर किसी समय कहा जाता है था कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः अर्थात् जिस घर में नारी का सम्मान होता है उस घर में देवता निवास करते है। परन्तु आगे चलकर कवि यह कहने लगे कि अबला तेरी यहीं कहानी आंचल में दूध और आँखों में पानी। इस प्रकार नारियों के प्रति पुरूषों का नजरिया एवं उनके प्रति मापदण्ड समय पर बदलते रहा है। फिर भी प्राचीन भारत हो या चाहे मध्यकालीन भारत या फिर आधुनिक भारत भारतीय समाज के निर्माण एवं विकास में और राष्ट्र की तरक्की में नारियों कि पुरूषों के समान बराबरी का योगदान रहा है। हाँलाकि हमारे भारतीय समाज में नारियों के उत्थान के मार्ग में ऐसे प्रतिमूल्य विधान बनाये गये जिसके कारण पुरूषों के बराबरी में नारियों या महिलायों का सर्वागीण विकास नहीं हो सका है। नारी परिवार की महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है।

कुंजी शब्द : सतनाम पंथ, महिलाओं के विकास, राजनितिक चेतना, छत्तीसगढ़ के सामाजिक ।

1. प्रस्तावना:

21 वीं सदी का दौर वैश्वीकरण का दौर है। इसे महिला सशक्तिकरण के नाम से भी जाना जाता है। भारत वहीं देश है जहाँ एक समय गौवरान्ति स्वर किसी समय कहा जाता है था कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः अर्थात् जिस घर में नारी का सम्मान होता है उस घर में देवता निवास करते है। परन्तु आगे चलकर कवि यह कहने लगे कि अबला तेरी यहीं कहानी आंचल में दूध और आँखों में पानी। इस प्रकार नारियों के प्रति पुरूषों का नजरिया एवं उनके प्रति मापदण्ड समय पर बदलते रहा है। फिर भी प्राचीन भारत हो या चाहे मध्यकालीन भारत या फिर आधुनिक भारत भारतीय समाज के निर्माण एवं विकास में और राष्ट्र की तरक्की में नारियों कि पुरूषों के समान बराबरी का योगदान रहा है। हाँलाकि हमारे भारतीय समाज में नारियों के उत्थान के मार्ग में ऐसे प्रतिमूल्य विधान बनाये गये जिसके कारण पुरूषों के बराबरी में नारियों या महिलायों का सर्वागीण विकास नहीं हो सका है। नारी परिवार की महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। वह एक मनुष्य को जन्म देकर उसके वह व्यक्ति निर्माण करती है साथ ही विश्व निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका संचालन करती है। समाज की सबसे बड़ी इकाई परिवार होती है। चाहे परिवार एकाकी हो या संयुक्त, वह दोनों ही दृष्टिकोण से अपने कर्तव्यों एवं दायित्यों को भलि भाँति से निभाती है। अगर इतिहास इस के पन्ने को पल्टे जाये तो पता चलता है की महान व्यक्तियों के चरित्र के निर्माण में महिलायों के महत्वपूर्ण भागीदारी रही जैसे महात्मा बुद्ध, शिवाजी शिवा जी महराज या फिर महात्मा गांधी। इन सभी की चरित्र निखारने में माताओं (महिलाओं) का महत्वपूर्ण योगदान थी। नारी को प्रभासित किया जाये तो वह ममता कल्याण सेवा, दयात्याग, प्रेम और उच्च मूल्यों का सजीव प्रतिमा है। मुख्य बिन्दु- स्वतंत्रता सेनानी, छत्तीसगढ़, महिलाएँ, योगदान प्रचीन काल से ही भारत के सर्वागीण विकास में महिलाओं का उल्लेखनीय भूमिका रही है।1 इस नल प्राचीनकाल इतिहास के अवलोकन से ज्ञात होता है। कि लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, विदुशी महिलाओं ने शिक्षा हिसात्य एवं समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। मध्यकाल में रजिया सुल्ताना, नूरजहां अस्मत बेगम, जेबुन्निसा, जैसे-प्रखण्ड महिलाओं ने साहित्य एवं राजनैतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दी है।

2. साहित्य कि समीक्षा :

आधुनिक युग में तथा आजादी के आंदोलन में महारानी लक्ष्मी बाई, रानी दुर्गा बाई बेसेन्ट, सरोजनी नायडु, सावित्री बाई फुले, झलकारी बाई, कस्तुरबा गांधी, पण्डित रमा बाई, ताराबाई, विजयलक्ष्मी पण्डित जैसे-महान् ने स्वतंत्रता आंदोलन तथा राजनीतिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर अपना नाम दर्ज किये। छत्तीसगढ़ अंचल में अनेक महिलाओं ने सामाजिक,राजनीतिक, सांस्कृतिक चेतना एवं स्वतंत्रता आंदोलन में प्रशंसनीय कार्य कि है। [2]जिसमें राधा बाई, मनटोरा बाई, फुटानिया बाई केकती बाई, फुलकुंवर बाई

श्रीवास्वत रूखमिन बाई, रोहणी बाई परगनिहा, जमुना बाई श्रीमति पार्वती बाई गनौद, श्रीमति बेला बाई, श्रीमति अनुसूईया, मेहरा बाई, श्यामा बाई, राजमोहनी देवी सुराना तुलसीदेवी शुक्ल, लीलाबाई, श्रीमति गया बाई, सुकरिया बाई ने इत्यादि महिलाओं ने सामाजिक एंव राजनैतिक जागरूकतामें उल्लेखनीय भूमिका निभायी है। छत्तीगसढ़ प्रदेश में आदिवासियों के आबादी के पश्चात् सतनामियों कि बहुलता इस प्रदेश में अधिक है यानि सतनामियों की जनसंख्या अधिक है।[3] इसलिए छत्तीसगढ़ को सतनामी बहुल प्रदेश माना जाता है। हालांकि धर्मान्तरण के कारण वर्तमान में इस समुदाय की आबादी घट गयी है। सांराशतः यह कहना उचित होगा कि भारत के निर्माण एंव विकास में महिलाओं कि भूमिका को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। छत्तीसगढ़ प्रदेश के सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक एंव राजनीतिक जागरूकता के प्रसार में सतनाम पंथ के अनुयायी महियाओं का महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जिनमें स्वर्गीय, करूणामाता, श्रीमति शाकुंतला बंजारे, श्रीमति पार्वती दीदी, सूरज बाई खाण्डे ।[4] शांतिबाई चेलक, उषा बारले, प्रतिमा कमला मनहर, शांकुलता डहरिया, उमा भतपहरी आदि ख्याति नाम है जो छत्तीगसढ़ अंचल में राजनीतिक, सामाजिक जागरूकता के मिशल कायम कि है। जिसके योगदान को रेखांकित कर प्रकाश में लाना इस शोध कार्य का मूल उद्देश्य है । हमारे भारत देश के संविधान के अनुच्छेद 14 में विधि के समझ समता तथा विधियों के संरक्षण की व्यवस्था की गई है।[5] इस अनुच्छेद में उल्लेख है कि किसी भी नागरिक को उसके केवल धर्म मुलवंश न की लिंग जन्म स्थान पर किसी भी तरह की भेदभाव न की जाये। परन्तु इसके बाद भी महिलाओं के साथ भेदभाव जारी है। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों अनुरूप महिलाओं के सुरक्षा के लिए समय पर कानून बनाये जा रहे है। भारतीय समाज के निर्माण एवं विकास में और राष्ट्र की तरक्की में नारियों कि पुरूषों के समान बराबरी का योगदान रहा है।[6]हालांकि हमारे भारतीय समाज में नारियों के उत्थान के मार्ग में ऐसे प्रतिकूल विधान बनाये गये। जिसके कारण पुरूषों के बराबरी में महिलाओं का सर्वागीण विकास नही होसका है।[7] भारत की सांस्कृतिक अस्मिता को उज्जवल बनाने में सामाजिक राजनीतिक एवं राष्ट्रीय कर्मठता की पहचान सतनामियों की विशेष है।[8] हमारी शिक्षा एवं उत्थान पर्दाप्रथा का विरोध अंधविश्वास कर्मकाण्ड से युक्ति, मृतभोज का विरोध, रूढिवाद का प्रतिकार, बाल विवाह एंव बहुविवाह, बहुपत्नी प्रथा का प्रबल विरोध सतनामियों समाज की महिलाओं के सामाजिक एवं राजनीतिक जागरूकता का प्रमाण हैं ।[9] अखिल भारतीय क्रांग्रेस की स्थापना तत्पश्चात् छत्तीसगढ़ अंचल में कांग्रेस की स्थापना तथा कांग्रेस के प्रचार में छत्तीसगढ़ सतनामी महिलाओं की अग्रणी भूमिका रही है।[10] रायपुर एवं बिलासपुर कांग्रेस की स्थापना कालांतर में गांधी युगीन स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरणों में सतनामी समाज की महिलाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक सक्रियता एवं भूमिका भागीदारी इस बात की तथ्य को पुष्ट करता है। कि अंचल में सामाजिक एवं राजनीतिक जागरण के क्षेत्र में प्रशंसनीय भूमिका प्रदर्शित कि है। गांधी इरविन स्वाधीनता आंदोलन के विभिन्न चरणों में महिलाओं ने काफी संख्या में भाग लेकर जैसे- मादक वस्तुओं के निशेध, विदेशी वस्तुओं का बहिश्कार जंगल कानून का उल्लंघन आदि आंदोलन में महिलाओं ने खुलकर भाग ली। और ब्रिटिश हुकुमत को चुनौती देने में कामयाब रही। फलस्वरूप गांधी जी ने महिला उत्थान आंदोलन को स्वतंत्रता आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया और महिला उत्थान मार्ग प्रशस्त होने लगा।[11] छत्तीसगढ़ के अंचल के सतनाम पंथ अनुयायी महिलाओं ने गुरूघासीदास द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों, उपदेशों एवं विचारधाराओं को आत्मसात करके इस पंथ के अनुयायियों ने सामाजिक, राजनैतिक चेतना के अभियानो को आगे बढ़ाया फलस्वरूप सामाजिक राजनैतिक क्षेत्र में जागरूकता फैलाया संचालित सतनाम आंदोलन के समय से ही सामाजिक व राजनीतिक दृष्टि से जागरूक हो चुकी थी।[12] इस समाज के महिलाओं ने बाधा के सिद्धांतों, अमृतवाणियों आदर्शो व उपदेशों को आत्मसात करके, सामाजिक राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी निभाना प्रारंभ कि इससे सतनामी समाज का ही नही वरन् इस अंचल के अन्य समाज के महिलाओं ने लोगों में सामाजिक एवं राजनैतिक जागरूकता का प्रसार हुआ।

इसका प्रभाव वर्तमान समय में स्पष्ट तौर पर परिलक्षित होता है। सतनामी समाज के मिनीमाता महिला सशक्तिकरण महिला उत्थान और नारी जागृति व शिक्षा के क्षेत्र में स्व. मिनीमाता का उल्लेखनीय भूमिका रही है।[13] स्व. मिनीमाता सन् 1957 से सन् 1972 तक छत्तीगसढ़ के विभिन्न क्षेत्रों से निरन्तर निर्वाचित होती रही। अस्पृश्यता निवारण कानून माताजी की ऐतिहासिक देन है।[14] ''उन्होंने नर और नारी जीने के दोनों अधिकारी की अवधारणा को प्रचारित कर नारी की महत्व को प्रतिपादित किया।[15] माताजी समाज और सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र में भागीदारी प्रारंभ की। राष्ट्रविकास की दिशा में नारी शक्ति की प्रांसगिकता को रेखांकित कर उसकी महत्व प्रतिपादित किया। छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक अस्मिता में सजोकर रखने और बढ़ाने में छत्तीगसढ़ के सतनाम पंथ के महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसलिए छत्तीगसढ़ को शांति समरसता और सद्भावना का प्रदेश कहा जाता है। और यह संदेश पूरे भारत वर्ष में विख्यात है। इस क्षेत्र में सूरजबाई खाण्डे, उषा बारले, शांतिबाई चेलक का नाम प्रमुख है।[16] प्रस्तुत शोध प्रबंध में छत्तीसगढ़ प्रदेश के सतनामी समाज की महिलाओं के योगदान का रेखांकित कर यथा- स्थान प्रदान किया जायेगा। शोध प्रबंध में शोध के उद्देश्यों एवं महत्व को पूर्ण करने का प्रयास किया जायेगा। उद्देश्य एवं महत्व को ध्यान में रखते हुए अधोपरांत संरचना कर पूर्ण किया गया है।

संम्बधित शोध अध्ययन (4)

शोध प्रविधिः-

(1) प्रथम स्त्रोत के रूप में मौलिक संदर्भ ग्रंथो के साथ शासकीय अभिलेखों, जिला गजेटियर का अध्ययन।

(2) द्वितीय स्त्रोत के रूप में साझात्कार व प्रश्नावली अवलोकन एवं पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन।

3. शोध अध्ययन का उद्देश्यः-

(1)छत्तीसगढ़ में महिलाओं की दशा में सामाजिक व राजीतिक सुधार कार्य का अध्ययन।
(2) वर्ग भेद के पश्चात् भी छत्तीसगढ़ में महिलाओं के विकास का अध्ययन।
(3) सतनाम पंथ के अनुयायी महिलाओं के कार्यो का आकलन और प्रस्तुती।
(4) स्वतंत्रता के पश्चात् सतनाम पंथ की महिलाओं का छत्तीसगढ़ में सामाजिक तथा राजनीतिक विकास के संदर्भ में कार्यो का मूल्यांकन।
(4)छत्तीगसढ़ में महिलाओं का सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव को रेखांकित करना।

4. प्रस्तावित कार्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदानः-

सतनाम पंथ के महिलाओं के विविध क्षेत्र में योगदान अध्ययन एवं शोध केन्द्र रहा है। वर्तमान समय वैश्वीकरण दौर है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र इससे प्रभावित हो रहा है। इसके उपरांत भी सतनामी समाज की महिलाओं अपने सामाजिक मूल्यों मान्यताओं एवं संस्कृति को संरक्षित रखने में बहुत कामयाबी हासिल की है। भारत के सामाजिक तथा राजनैतिक जागरण में सतनामी समाज के पुरूषों एवं महिलाओं का महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत के सतनामी महिलाओं का सामाजिक तथा राजनीतिक जागरूकता अतुलनीय योगदान है। सतनाम पंथ के महिलाओं का संक्षेप में उल्लेख यथा स्व. मिनीमाता स्व. करूणा माता श्रीमति कमला मनहर, श्रीमति शांति बाई चेलक, सुरूज बाई खाण्डे, श्रीमति उषा बारले, श्रीमति चम्पा गेंदले, केरा बाई मनहर, श्रीमति जुगाबाई टण्डन, फूलबाई खाण्डे एवं अन्य महिलाओं का योगदान रहा है। भारत की सांस्कृतिक को उज्जवल बनाने में सामाजिक, राजनीतिक एवं राष्ट्रीय प्रदेश की पहचान सतनामियों की विशिष्टता रही है।

5. निष्कर्षः-

शोध पत्र का साकारात्मक परिणाम ही शोध पत्र के महत्व को बढ़ाता है। फलस्वरूप जन एवं समाजोपयोगी बनता है। छत्तीसगढ़ अंचल के सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना के विकास में सतनामी समाज के महिलाओं का योगदान पर शोध पत्र में पूर्णता से परिणाम लाने का प्रयास किया गया है। इसके परिणाम स्वरूप छत्तीसगढ़ अंचल के महिलाओं में सामजिक सद्भाव, समरसता, सहिष्णुता, सहकार और समन्वय की भावना को बढावा मिलेगा। नारी शिक्षा, नारी उत्थान एवं सशक्तिकरण शराब बंदी आंदोलन सामाजिक तथा धार्मिक कुरीतियों का विरोध अन्याय एवं अत्याचार के मुखरित होने, इसके साथ ही महिला समुदाय को संगठित एवं सशक्त बनाने की दिशा में महिलाओं को संबल मिलेगा। राजनीति क्षेत्र में राजनैतिक चेतना विकसित होने से अंचल के अन्य महिलाओं को प्रेरणा मिलेगी स्त्री पुरूष की समानता को बल मिलेगा घरेलु हिंसा को रोकने के प्रति जागृति आयोगी। सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों में रोजगार प्राप्त करने की दिशा में लोगों को जागरूक बनाने, शिक्षा के प्रति जागृति महिलाओं एवं बलिकाओं को योग्य एवं काबिल बनाने की प्रयास में त्रीवता आयेगी। फलस्वरूप नारी चेतना एवं शक्ति को बढावा मिलेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. फरहद' जोशी दादूलाल- सत्यध्वज पत्रिका अंक 22 वर्ष -7 पृष्ठ 25-26 गुरूघासीदास सेवा समिति मिलाई नगर 1996
2. उपरोक्त, पृष्ठ 25-26
3. शुक्ल, हीरालाल, पूर्वोक्त, पृष्ठ 75
4. उपरोक्त पृष्ठ 75
5. उपरोक्त पृष्ठ 75-76
6. जोशी, दादूलाल, गुरू घासीदास का सतनाम आन्दोलनः एक जनक्रांति वैभ प्रकाशन रायपुर 2014 पृष्ठ 80
7. सिंहासन बत्तीसी (कथा संग्रह) प्रारंभिक पाठ से उद्धृत पृष्ठ 3
8. सोनकर, पी. डी. छत्तीसगढ़ में सतनाम आदोलन और साँस्कृतिक पुनर्जागरण वैभव प्रकाशन रायपुर 2015 पृष्ठ 183
9. जोशी, दादूलाल, पूर्वोक्त पृष्ठ 69
10. शुक्ल, हीरालाल पूर्वोक्त पृष्ठ 13
11. उपरोक्त शुक्ल, पृष्ठ 75
12. बेहार रामकुमार, छत्तीसगढ़ी संस्कृति और विभूतियाँ, छत्तीसगढ़ शोध संस्थान सुन्दरनगर रायपुर 2003 पृष्ठ 39-40
13. शुक्ल, हीरालाल पूर्वोक्त पृष्ठ 21-22
14. प्रसाद, मुंशी देवी, औरंगजेब नामा ग्रंथ विभाग रायपुर पृष्ठ 113-114
15. सोनी, जे. आर. सतनाम दर्शन स्मारिका 2012 प्रका. गुरू घासीदास साहित्य संस्कृति अकादमी रायपुर पृष्ठ 65
16. शुक्ल, हीरालाल पूर्वोक्त, पृष्ठ 21-22